पर्यावरण और गाँधी के विचार

डॉ राजेंद्र प्रसाद (सहायक प्राध्यापक)
अग्रवाल कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन
मिल्क प्लांट रोड सेक्टर २
बल्लबगढ़ फरीदाबाद हरियाणा

सारांश

पर्यावरण (परि+आवरण) से बना है अर्थात हमारे चारों ओर का आवरण, फिर चाहे वो भौतिक, रासायनिक, तथा जैविक कोई भी हो ये सभी किसी न किसी रूप में प्रत्येक जीवधारी या परितन्त्रकीय आबादी को प्रभावित कर उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते है।

आज के भौतिकतावादी युग में मानव ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए किसी न किसी रूप में उक्त सभी घटकों का अधिकतम दोहन किया है, जो कि मानव जीवन के लिए एक सबसे बड़े संकट के रूप में देखा जा रहा है, जिस पर गाँधी जी ने कई दशकों पहले ही अपने विचार व्यक्त कर दिये थे। उनका कहना था "सादा जीवन, उच्च विचार" के आधार पर जीवन-यापन करना चाहिए। उन्होंने कहा था आज के आधुनिकतावादी युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है।

परन्तु विकास में हम इतना उलझ गए हैं और अपनी जरूरतों के लिए पर्यावण का हनन कर रहें है। हम सभी यह जानते हैं कि परिवर्तन विकास कि धुरी है और आज प्रत्येक मानव, समाज, राष्ट्र और पूरा विश्व विकास की ओर अग्रसर है। इस पर गाँधी जी ने कहा था कि विकास समाज कि मौलिक जरूरतों के अनुसार होना चाहिए। गाँधी जी ने वायुप्रदूषण पर बात करते हुए १९१३ में दक्षिण के सत्याग्रह आंदोलन के समय ही आने वाले समय में स्वच्छ हवा की कीमत बता दी थी उन्होंने "की टू हेल्थ"(स्वास्थ्य कुंजी) में यह बात कही थी और बताया था कि शरीर को हवा, पानी और भोजन तीनों आवश्यक हैं, जिनमें हवा सर्वोपरि है इसी के आधार पर जनवरी १९१८ को अहमदाबाद में भी गाँधी जी ने इन्ही तीन तत्वों वायु , जल और अनाज की आजादी की बात कही थी अतः आज से लगभग सदियों पहले ही गाँधी जी ने पर्यावरण के प्रति अपने विचार व्यक्त कर दिये थे

गाँधी जी ने मानव जीवन के सतत विकास में परिवर्तन की बात की थी उनका कहना था की यदि हम अपनी भौतिक आवश्यकतावों को पूरा करने के लिए १५ या २० किलोमीटर से ज्यादा दूर के संसाधनों का प्रयोग करेंगे तो प्रकृति की अर्थव्यवस्था नष्ट हो जाएगी जिसकी चेतावनी उन्होंने १९२८ में ही दे दी थी

आज हम सभी जानते हैं की कारण पर्यावरण के लिए कितनी खतरनाक हैं जिस पर गांधी जी ने १९३८ में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा अपने प्रत्येक नागरिक के पास दो कारें और दो रेडियो सेट होने की बात का जवाब देते हुए कहा था की यदि भारत में प्रत्येक परिवार में एक कार की बात करें तो सड़कें काम पड़ जाएंगी जिसका उदहारण आज हमारे सामने है

अवधारणा

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी के 'एनवायरनमेंट' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। जिसका प्रचलन लगभग पिछले चार-पांच दशकों से ही हुआ है, क्योंकि हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही संस्कृति बोध या साहित्य लेखन में भी ये शब्द नहीं मिलता है। यह शब्द नया भले है लेकिन इससे सम्बंधित चिंता या चेतना नयी नहीं है, वह भारतीय संस्कृति के मूल में भी रही है। हिंदी में पर्यावरण (परि+आवरण) से बना है जिसका तात्पर्य है हमारे चारों ओर का आवरण चाहे वह भौतिक, रासायनिक तथा जैविक क्यों न हो, जैसे हवा, पानी, पर्वत, नदी, जंगल, वनस्पति, पशु- पक्षी आदि का समन्वित रूप है जो सदैव प्रकृति प्रेम या प्रकृति मैत्री के रूप में हमारे संस्कारों में मौजूद थे।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति वंदना के रूप में उषा की प्रार्थना, सूर्य नमस्कार, नदियों की स्तुति और आरती, पेड़-पौधों की पूजा, भूधर के रूप में पर्वतों की वंदना, वनस्पतियों में ब्रह्मा के रोयें की परिकल्पना, मनुष्येतर जीवों के प्रति करुणा का भाव आदि बातें जीवन शैली की अभिन्न अंग रही हैं।

गाँधी जी ने पर्यावरण शब्द का प्रयोग नहीं किया था, किन्तु प्रकृति द्वारा दी गयी नियामतों से उनका गहरा लगाव था जैसा की उन्होंने २० अक्टूबर १९२७ को 'यंग इंडिया' के अंक में छपे एक लेख में हिन्दू धर्म की विशेषता बताते हुए यह बात कही थी कि-''हिन्दू धर्म न केवल मनुष्य मात्र की बल्कि प्राणि मात्र की एकता में विशवास करता है। मेरी राय में गाय की पूजा करके

उसने दया धर्म के विकास में अद्भुत सहायता की है। ये प्राणिमात्र की एकता और पवित्रता में विश्वास रखने का व्यावहारिक प्रयोग है।''

अर्थात प्राणिमात्र की एकता में जो विश्वास करेगा वह चर-अचर, पशु- पक्षी, नदी, पर्वत तथा वन सबके सहअस्तित्व में विश्वास करेगा और उन सब के संरक्षण में सदैव तत्पर रहेगा, क्योंकि आज जो पर्यावरण बचने के नाम पर बाघ, शेर, हाथी आदि जानवरों, पक्षियों, नदियों और वनो आदि को बचाने का जो विश्वव्यापी प्रयास किया जा रहा है ये सभी प्राणियों की एकता में विश्वास करने वाली बात में ही अन्तर्निहित है।

आज पर्यावरण संरक्षण के नाम पर वृक्षारोपण का जो अभियान चलाया जा रहा है उसके महत्व से गांधी जी भी अवगत थे क्योंकि उन्होंने भी वृक्ष पूजा को धर्म के रूप में माना था जो की उनके २६ सितम्बर १९२९ में 'यंग इंडिया' अंक में छपे एक लेख के अंश से मालूम पड़ता है-''जब हम किसी पुस्तक को पवित्र समझकर उसका आदर करते हैं, तो हम मूर्ति पूजा ही करते हैं।पवित्रता या पूजा के भाव से मंदिरों या मस्जिदों में जाने का भी वही अर्थ है। आज के भौतिकतावादी युग में मानव ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए किसी न किसी रूप में उक्त सभी घटकों का अधिकतम दोहन किया है, जो कि मानव जीवन के लिए एक सबसे बड़े संकट के रूप में देखा जा रहा है, जिस पर गाँधी जी ने कई दशकों पहले ही अपने विचार व्यक्त कर दिये थे। उनका कहना था "सादा जीवन, उच्च विचार" के आधार पर जीवन-यापन करना चाहिए। उन्होंने कहा था आज के आधुनिकतावादी युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। परन्तु विकास में हम इतना उलझ गए हैं और अपनी जरूरतों के लिए पर्यावण का हनन कर रहें है। हम सभी यह जानते हैं कि 'परिवर्तन विकास की धुरी है' और आज प्रत्येक मानव, समाज, राष्ट्र और पूरा विश्व विकास की ओर अग्रसर है। इस पर गाँधी जी ने कहा था कि विकास समाज कि मौलिक जरूरतों के अनुसार होना चाहिए।

वायु प्रदूषण पर गांधी जी के विचार

मौलिक आवश्यकताओं में हवा, पानी और भोजन हैं, जिन्हें शरीर के लिए प्राकृतिक पोषक के रूप में जाना जाता है। इस बात पर गाँधी जी ने अपने विचार १९१३ में दक्षिण अफ्रीका में अपने पहले सत्याग्रह आंदोलन की अगुआई करते हुए ही महसूस किया था और तभी उन्होंने आने वाले समाज के लिए स्वच्छ हवा का मिलना मुश्किल बताया था। गाँधी जी ने वायुप्रदूषण पर बात करते हुए १९१३ में दक्षिण के सत्याग्रह आंदोलन के समय ही आने वाले समय में स्वच्छ हवा की कीमत बता दी थी, उन्होंने "की टू हेल्थ"(स्वास्थ्य कुंजी) में यह बात कही थी और बताया था कि शरीर को हवा, पानी और भोजन तीनों आवश्यक हैं, जिनमें हवा सर्वोपरि है। इसी के आधार पर जनवरी १९१८ को अहमदाबाद में भी गाँधी जी ने इन्ही तीन तत्वों वायु , जल और अनाज की आजादी की बात कही थी। अतः आज से लगभग सदियों पहले ही गाँधी जी ने पर्यावरण के प्रति अपने विचार व्यक्त कर दिये थे।

पर्यावरण और सतत विकास पर गाँधी जी के विचार

गाँधी ने कहा था कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित हैं १९८७ में ब्रूनडलैण्ड कमीशन रिपोर्ट के सामान्य भविष्य के विचार से बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने स्थिरता और सतत विकास के लिए लगातार बढ़ती इच्छाओं और जरूरतों के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरे की ओर ध्यान दिलाया था। अपनी पुस्तक ''द हिन्द स्वराज'' में उन्होंने लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया था। उन्होंने वर्तमान सभ्यता को अंतहीन इच्छाओं और शैतानिक सोच से प्रेरित बताया, उनके अनुसार असली सभ्यता अपने कर्तव्यों का पालन करना और नैतिक और संयमित आचरण करना है। उनका दृष्टिकोण था कि लालच और जूनून पर अंकुश होना चाहिए। टिकाऊ विकास का केंद्र बिंदु समाज कि मौलिक जरूरतों को पूरा करना होना चाहिए। इस अर्थ में उनकी पुस्तक ''द हिन्द स्वराज'' टिकाऊ विकास का घोषणापत्र है। जिसमें कहा गया है कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित है।

गाँधी जी के अनुसार सतत जीवन के लिए दृष्टिकोण में बदलाव होना चाहिए

महात्मा गाँधी जी के कई बयान हैं जिन्हें टिकाऊ विकास के लिए उनके विश्वव्यापी दृष्टिकोण के रूप में उद्दत किया जा सकता है। यूरोपीय संघ के सन्दर्भ में दिए गए उनके एक बयान की प्रासंगिकता आज पूरे मानव समाज को है। उन्होंने १९३१ में लिखा था कि भौतिक सुख और आराम के साधनों के निर्माण और उनकी निरंतर खोज में लगे रहना ही अपने आप में एक बुराई है। उन्होंने कहा कि मै यह कहने का साहस करता हूँ कि यूरोपीय लोगों को अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा। इससे उनका काफी नुकसान होगा और वह आरामतलबी के दास बन जायेंगे। असल में यूरोपीय लोग अब गांधी जी कि बातों को सुन रहे हैं। यह बात कुछ ब्रिटिश नागरिकों के दृष्टिकोण से भी स्पष्ट है जिन्होंने सरल जीवन जीने के लिए ऊर्जा

और भौतिक संसाधनों पर से अपनी निर्भरता कम कर ली है। उन्होंने सूर्य ऊर्जा इकाई (जीवाश्म) स्थापित की है, यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके जरिए लन्दन में एक हाऊसिंग सोसाइटी चलाई जा रही है। सोसाइटी के प्रवेश द्वार पर लिखा है- यूके में एक व्यक्ति जितना उपभोग करता है अगर दुनिया का हर व्यक्ति इतना ही उपभोग करे तो सब की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें धरती जैसे तीन ग्रहों की जरुरत होगी ी गाँधी जी ने आठ दशक पहले ही लिख दिया था कि यदि भारत ने विकास के लिए पश्चिमी मॉडल का पालन किया तो उसे अपनी आवश्यकता कि पूर्ति के लिए एक अलग धरती की जरुरत होगी। लन्दन की इस हाउसिंग सोसाइटी के लोग किसी भी जलवायु और पर्यावरण आंदोलन से नहीं जुड़े हैं , और साथ ही वह अलग-अलग कामों और व्यवसायों से जुड़े हैं। ये सभी जीवंत मध्यम वर्ग का हिस्सा हैं। बस इन लोगों का खपत और उत्पादन दृष्टिकोण ही इन्हें दूसरों से अलग बनता है।

उनहोंने निर्णय ले रखा है कि दूरदराज के स्थानों से लाये जाने वाले खाद्य पदार्थ वे नहीं खाएंगे। उनका मानना है कि जब वस्तुओं को लम्बी दुरी से लाया जाता है तो परिवहन ,संरक्षण और पैकिंग में बहुत ज्यादा ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। दूर स्थानों से भोजन के लेन और उन पर निर्भरता से काफी ऊर्जा का प्रयोग होता है जिसकी वजह से काफी अधिक मात्रा में कार्बनडाइऑक्सइड और ग्रीनहॉउस गैसों का उत्सर्जन होता है ,इसलिए उनहोंने कुछ किलोमीटर के भीतर उपलब्ध पदार्थों के प्रयोग का निर्णय लिया है। जलवायु के अर्थशास्त्र पर युके में निकोलस स्टर्न कमेटी रिपोर्ट ग्रीन हॉउस गैस के काम उपयोग के साथ-साथ जीवन शैली में बदलाव करके एक कार्बन अर्थव्यवस्था से एक गैर कार्बन अर्थव्यवस्था में स्थानांतरित होने पर जोर देती है। गाँधी जी ने कई अवसरों पर लिखा है कि मनुष्य जब अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए १५ या २० किलोमीटर से ज्यादा दूर के संसाधनों को प्रयोग करेगा तो प्रकृति कि अर्थव्यवस्था नष्ट होगी। उनका स्वदेशी चिंतन और १९११ में 'प्रकृति की अर्थव्यवस्था' वाक्यांश के निर्माण के जरिए ही प्रकृति के प्रति उनकी गहरी समझ और संवेदनशीलता को समझा जा सकता है। १९२८ में ही उनहोंने चेतावनी दी थी कि विकास और औद्योगिकता में पश्चिमी देशों का पीछा करना मानवता और पृथ्वी के लिए खतरा पैदा करेगा। उनहोंने कहा कि भगवान न करे कि भारत को कभी पश्चिमी देशों की तरह औद्योगिकीकरण अपनाना पड़े। कुछ किलोमीटर के एक छोटे से द्वीप इंग्लैण्ड के आर्थिक साम्राज्यवाद ने आज दुनिया को उलझा रखा है। अगर सभी देश इसी तरह आर्थिक शोषण करेंगे तो यह दुनिया एक टिड्डियों के दाल की तरह हो जाएगी।

गाँधीजी की कारों के खिलाफ चेतावनी

आधुनिक सभ्यता की कुछ विशेषताओं में एक विशेषता यह है किगतिशीलता को बढ़ावा दने के लिए करों और विमानों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। जोसेफ स्टिग्लिट्ज़ ने अपनी पुस्तक "मेकिंग ग्लोबलीसाशन वर्क" में लिखा है ८० प्रतिशत ग्लोबल वार्मिंग हइड्रोकार्बन और २० प्रतिशत वनों की कटाई कि वजह से होती है। सबको पता है कि पर्यावरण के लिए कारों की बढ़ती संख्या कितना बड़ा खतरा है। जब १९३८ में गाँधी जी को बताया गया कि अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति चाहते हैं कि उनके देश के प्रत्येक नागरिक के पास दो कारें और दो रेडियो सेट हों तो महात्मा गाँधी ने यह कहते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की थी कि अगर हर भारतीय परिवार में एक कार होगी तो सड़कों पर चलने के लिए जगह की कमी पड़ जाएगी। साथ ही उन्होंने आगे कहा था कि अगर भारतीय एक कार भी रखे तो यह कोई अच्छा काम नहीं होगा। दांडी मार्च के दौरान जब कुछ लोग कार पर संतरे लाये तो उन्होंने कहा था कि नियम होना चाहिए कि यदि आप चल सकते हो तो कार से बचो।

कई यूरोपीय देश हैं जहाँ कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में करों के प्रवेश पर टैक्स लगाया जाता है ताकि प्रदूषण को काम किया जाए। साथ ही यूरोप में कई अन्य देश हैं जहाँ कार फ्री दिन मनाये जाते हैं। ऑड और इवन के जरिये भी सड़कों पर करों की संख्या को काम करने की कोशिश की जा रही है। ज्यादा कारों को रखने से होने वाले नुकशान पर गाँधी जी ने जो चेतावनी दी थी उसे आज पूरी दुनिया महसूस कर रही है।

जल संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन और वृक्षारोपण पर गाँधी जी के विचार

कहा जाता है कि 'जल ही जीवन है ' इस पर भी गाँधी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं उन्होंने कहा था कि एक दिन दुनिया में पानी की कमी से अकाल पड़ेगा। आजादी के लिए संघर्ष के समय ही गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में होने वाले अकालों पर भी उन्होंने चिंता व्यक्त की थी। पानी की कमी के मुद्दे पर उन्होंने सभी रियासतों को सलाह दी थी कि सभी को एक संघ बनाकर दीर्घकालिक उपाय करने चाहिए और खाली जमीन पर पेड़ लगाने चाहिए। उन्होंने बड़े पैमाने पर वनों के काटने का विरोध किया था। आज २१वीं सदी में गाँधी जी कि बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी है। अंग्रेजों ने वनों को बस धन कमाने का जरिया ही समझा था। इसके साथ ही गाँधी जी ने वर्षा जल संचयन पर भी जोर दिया था और उन्होंने १९४७ में दिल्ली में प्रार्थना में बोलते समय बारिश के पानी के प्रयोग की वकालत भी की थी और इससे फसलों की सिंचाई पर जोर

दिया। किसानों पर २००६ में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्वामीनाथन आयोग ने भी सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए बारिश के पानी के उपयोग की सिफारिश की थी।

गाँधी जी के विचारों और दृष्टिकोण से जर्मनी की ग्रीन पार्टी भी प्रभावित हुई

ग्रीन पार्टी के संस्थापकों में से एक पेट्रा केली ने पार्टी की स्थापना में महात्मा गाँधी के विचारों के प्रभावों को स्वीकार करते हुए लिखा है कि हम अपने काम करने के तरीकों में महात्मा गाँधी से बहुत प्रेरित हुए हैं। हमारी धारणा है कि हमारी जीवनशैली इस तरह की होनी चाहिए कि हमें लगातार उत्पादन के लिए कच्चे मॉल की आपूर्ति होती रहे और हम कच्चे मॉल का उपयोग करते रहें। कच्चे मॉल के उपभोग से पारिस्थितिकी तंत्र उन्मुख जीवनशैली विकसित होगी और साथ ही अर्थव्यवस्था से हिंसक नीतियां भी कम होंगी।

गाँधी जी ने कहा था कि सरल जीवनशैली और अहिंसा से ही पृथ्वी बच सकती है

एक पुस्तक '' सर्विविंग द सेंचुरी: फेसिंग क्लाउड कैओस'' जो प्रोफेसर हर्बर्ट गिरार्डेट द्वारा सम्पादित की गई है, उसमे चार मानक सिद्धांतो अहिंसा, स्थावित्य, सम्मान और न्याय को इस सदी और पृथ्वी को बचाने के लिए जरूरी बताया गया है। धीरे-धीरे ही सही दुनिया गाँधी जी और उनके उन सिद्धांतो को मान और अपना रही है जो सदैव उनके जीवन और कार्यों के केंद्र में रहे हैं। द टाइम मैगज़ीन ने अपने ९ अप्रैल २००७ के अंक में दुनिया को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के ५१ उपाय छापे थे। इसमें से ५१वां उपाय था कम उपभोग, ज्यादा साझेदारी और सरल जीवन। दूसरे शब्दों में कहें तो टाइम मैगज़ीन जैसी पत्रिका जिसे पश्चिमी देशों का मुख्यपत्र कहा जाता है, वह अब ग्लोबल वार्मिंग के खतरों को रोकने के लिए अब गाँधी जी के रास्तों को अपनाने के लिए कह रही थी। ये सब तथ्य बताते हैं कि पृथ्वी को बचाने के लिए गाँधी जी कि मौलिक सोच और उनके विचार कितने महत्वपूर्ण और गहरे हैं। इसलिए टिकाऊ और सतत विकास के लिए गाँधी जी के विचारों को फिर से समझना अनिवार्य है।

गाँधी जी ने कहा था शौचालय नहीं सोनखाद चाहिए

शहरों के मामले में गाँधी जी की यह राय अवश्य थी कि शहरों की सफाई का शास्त्र हमें पश्चिम से सीखना चाहिए; किन्तु वह गाँवों में खुले शौच का विकल्प शौचालय की बजाय, शौच को एक फुट गहरे गड्ढे में मिट्टी से ढँक देना मानते थे। 'मेरे सपनो के भारत' पुस्तक में वह सफाई और खाद पर चर्चा करते हुए लिखते हैं -**''इस भयंकर गन्दगी से बचने के लिए कोई बड़ा साधन नहीं चाहिए; मात्र मामूली फावड़े का उपयोग करने की जरूरत है।''** दरअसल, गाँधी जी, शौच और कचरे को सीधे-सीधे 'सोनखाद' में बदलने के पक्षधर थे। वह जानते थे कि मल को संपत्ति में बदला जा सकता है।

इस बात को वैज्ञानिक तौर पर यूँ समझना चाहिए। गाँधी जी लिखते हैं - **''मल चाहे सूखा हो या तरल, उसे ज्यादा-से-ज्यादा एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़ दिया जाये। जमीन की ऊपरी सतह सूक्ष्म जीवों से परिपूर्ण होती है और हवा एवं रोशनी की सहायता से, जो कि आसानी से वहाँ पहुँच जाती है; वहाँ जीव, मल-मूत्र को एक हफ्ते के अंदर एक अच्छी, मुलायम और सुगन्धित मिट्टी में बादक देते हैं।''** सोपान जोशी कि पुस्तक 'जल ,मल, थल' इसका खुलासा करती है जिसमें कहा गया है कि एक मानव शरीर एक वर्ष में ४०५६ किलो नाइट्रोजन, ०.५५ किलो फॉस्फोरस और १०२८ किलो पोटैशियम का उत्सर्जन करता है। १२५ करोड़ आबादी के गुणांक में यह मात्रा लगभग ९० लाख तन होती है। मानव मल-मूत्र को शौचालयों में कैदकर क्या हम प्राकृतिक खाद की इतनी मात्रा खो नहीं दे रहे हैं? त्रिकुण्डीय प्रणाली वाले 'सेप्टिक टैंक' तथा मल-मूत्र को दो अलग-अलग खांचों भरकर हम 'ईकोसैन' के रूप में यह मात्रा कुछ बचा जरूर सकते हैं ,लेकिन यह हम कैसे भूल सकते हैं कि खुले में पड़े शौच के कम्पोस्ट में बदलने की अवधि दिनों में है और सीवेज टैंक व पाइप लाइनों में पहुंचे शौच की कम्पोस्ट में बदलने की अवधि महीनों में ; क्योंकि कैद मल का सम्बन्ध मिट्टी, हवा व प्रकाश से टूट जाता है ,लेकिन इन्हीं से संपर्क में बने रहने के कारण खेतों में पड़ा मानव मल आज भी हमारी बीमारी का उतना बड़ा कारण नहीं है ,जितना बड़ा शोधन सयंत्रों के बाद हमारी नदियों में पहुंचा मानव मल।

गाँधी जी के अनुसार कचरा निष्पादन का सिद्धांत

समझने की बात है कि एकल होते परिवारों के कारण मवेशियों की घटती संख्या, परिणामस्वरूप घटते गोबर की मात्रा के कारण जैविक खेती पहले ही कठिन हो गई है। कचरे से कम्पोस्ट का चलन अभी घर-घर अपनाया नहीं जा सका है। अतः गाँधी जयंती पर स्वछता, सेहत, पर्यावरण, गो, गंगा, और ग्राम रक्षा से लेकर आर्थिकी की रक्षा को चाहने वालों को पहला सन्देश यही है कि गावों में 'घर-घर शौचालय' की बजाय, 'घर-घर कम्पोस्ट' के लक्ष्य पर काम करें।

इसके लिए गाँधी जी ने कचरे को तीन वर्ग में छंटाई का मंत्र बहुत पहले बताया और अपनाया था: पहले वर्ग में वह कूड़ा, जिससे खाद बनाई जा सकती हो। दूसरे वर्ग में वह कूड़ा जिसका पुनः उपयोग संभव हो; जैसे हड्डी, लोहा, प्लास्टिक, कागज, कपड़े आदि। तीसरे वर्ग में उस कूड़े को छाँटकर अलग करने को कहा, जिसे जमीन में गाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। कचरे

के कारण, जलाशयों और नदियों की लज्जाजनक दुर्दशा और पैदा होने वाली बीमारियों को लेकर भी गाँधी जी ने कम चिंता नहीं जताई।

गाँधी जी ने गोवंश के माध्यम से खेती और ग्रामवासियों के स्वाबलंबन के रूप में गोरक्षा और गोसेवा के महत्व को बताया था, क्योंकि गाँधी जी ने गोवंश रक्षा सूत्रों को बार-बार समाज में दोहराया ही नहीं बल्कि जमना लाल जी जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को गोपालन कार्य को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी सौंपी थी। उनका मानना था की खेती की रक्षा गोवंश की रक्षा से ही संभव है। वे बारम्बार यही कहते थे कि हमारे जानवर हिंदुस्तान और दुनिया के गौरव बन सकते है क्योंकि पर्यावरणीय गौरव इसी में निहित है।

गाँधी जी ने कहा था कि मस्तिष्क की शुद्धता से ही पर्यावरण की शुद्धता है

गाँधी जी साहित्य, पर्यावरण के दूसरे पहलुवों पर सीधे-सीधे भले ही नहीं बात करते थे लेकिन संयम, सादगी, स्वावलम्बन और सच पर आधारित उनका सही मायने में सभ्य और सांस्कारिक जीवन दर्शन पर्यावरण की वर्तमान की सभी समस्याओं के समाधान प्रस्तुत कर देता है। उनके अनुसार एकादस व्रत भी एक तरह से मानव और पर्यावरण के संरक्षण और समृद्धि का ही व्रत है, क्योंकि ''प्रकृति हर एक की जरूरत पूरी कर सकती है, लेकिन लालच एक व्यक्ति की भी नहीं'' इस कथन के आधार पर गाँधी जी आधुनिकता और तथाकथित विकास के दो पागल घोड़ों के हम सवारों को लगाम खींचने का निर्देश स्वतः दे देते थे, जैसे गंदगी, अच्छाई या बुराई इत्यादि इस दुनिया में जो कुछ भी घटता है, वो हकीकत में घटने से पहले किसी न किसी के दिमाग में घट चुका होता है, यह बात पश्चिमी देशों ने भी समझी और उन्होंने हमें पहली या दूसरी दुनिया न कहकर तीसरी दुनिया कहा ऐसे शब्दों ने हमारे पिछड़ेपन, अलग-थलग और अज्ञानी होने का एहसास दिलाया है जिसने हमारे प्रकृति अनुकूलन, समय सिद्ध व स्वयं सिद्ध ज्ञान पर से हमारे ही विश्वास को तोड़ा और अपनी हर चीज़, विधान व संस्कार को आधुनिक बताकर हमें उसका उपभोक्ता बना दिया, अर्थात हमें संयम, सादगी और सदुपयोग की जगह सभ्यता के नाम पर अतिभोग तथा 'उपयोग करो और फ़ेंक दो' का असभ्य सिद्धांत थमा दिया। आज हमारे सारे संस्कार बदल गए और परमार्थ फ़ालतू काम है; स्वार्थ से ही सिद्धि है, क्योंकि आज ए.सी. के कारण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है फिर भी "अपना कमरा अपनी गाडी के भीतर ठंढक होनी चाहिए दुनिया जाये भाड़ में," "साथ ही घर का कचरा बाहर और अतिभोग का सुविधा सामान अंदर" जिसके लिए सिर्फ पेट ही नहीं तिजोरियां भरी जा रही हैं। कभी कहा जाता था कि ''उत्तम खेती मध्यम बान, निषिद्ध चाकरी भीख निदान'' लेकिन आज खेती-बाड़ी को निकृष्ट और दलाली तथा चाकरी को उत्तम बताया जाता है और कहा जाता है ''गावों हटाओ, शहर बसाओ'' और 'कर्ज लो घी पियो'। आज जंगलों को काटकर खेत बनाये जा रहे हैं और उन खेतों की सिंचाई के लिए नदी, तालाब व नहर के बजाय धरती का सीना चाक करने वाले ट्यूबवेल, बोरवेल, समर्सिबल और जेट पंप को अपना लिया गया है । आज वास्तविकता है कि हम ''सैप्टिक टैंकों से भी आगे बढ़कर सीवेज पाइपों वाले आधुनिक हो गए, यूकेलिप्टस याद रहा; पंचवटी भूल गए''।

वर्तमान का स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत अभियान तथा गाँधी जी

कहा जाता है कि 'कचरा पर्यावरण का दुश्मन है और स्वच्छता पर्यावरण कि दोस्त' क्योंकि 'कचरे से बीमारी और बदहाली आती है तथा स्वच्छता से सेहत और समृद्धि' आती है ये बात पूर्व में गाँधी जी और वर्तमान प्रधान मंत्री मोदी जी भी बखूबी जानते हैं। इसीलिए माननीय मोदी जी ने २०१४ में गाँधी जयंती को 'स्वच्छ भारत मिशन' की शुरुआत की, लेकिन यदि दोनों के विचारों में तुलना की जाये तो निम्न निष्कर्ष निकलता है **''मोदी जी का स्वच्छता विचार,कचरा एकत्र करना तो जानता है, किन्तु उसका प्रकृति अनुकूल उचित निष्पादन करना नहीं जानता। गांधी जी जानते थे की यदि कचरे का निष्पादन उचित तरीके से न हो, तो ऐसा निष्पादन पर्यावरण का दोस्त होने की बजाय दुश्मन साबित होगा।''**